नाम - डॉ. प्रदीप कुमार राय
एसो. प्रोफेसर
विषय - राजनीति शास्त्र
कक्षा - बी. ए. (प्रतिष्ठा) पार्ट - 03
पेपर - 08
अध्याय - 03
दिनांक - 20.05.20

टॉपिक - उदारवादी राष्ट्रीय आंदोलन के काल में (1885-1905) कांग्रेस की मांगें —

1885 से 1905 तक की अवधि को उदार राष्ट्रीयता का काल कहा जाता है जब कांग्रेस का ध्येय, दृष्टिकोण और कार्यप उदारता और सुधारवाद से प्रेरित थी। इस दरम्यान उनकी मांगें व्यावहारिक एवं उदार थी जिसे हम निम्न पारित प्रस्तावों से समझ सकते हैं —

(1.) भारतीय शासन की जांच के लिये सरकार द्वारा एक रॉयल कमीशन' नियुक्त किया जाये।

(2.) भारत मंत्री तथा भारत परिषद् के पद का अंत किया जाये।

(3.) केन्द्रीय तथा प्रांतीय परिषदों का विस्तार तथा सुधार किया जाये। उनमें प्रश्न पूछने, बजट पास करने तथा बहुमत के आधार पर निर्णय करने की प्रथा जारी की जाये।

(4.) नागरिक सेवा प्रतियोगिता परीक्षा भारत तथा इंगलैंड दोनों देशों में एक साथ हो तथा परीक्षार्थियों की आयु बढ़ा दी जा

(5.) भारत के सैनिक व्यय में कमी की जाये और ब्रिटिश सेना की संख्या कम की जाये।

(6.) इंगलैंड से आनेवाले कपड़े पर आयात कर जो लिटन के शासन काल में हटा दिया गया था, पुनः लगाया जाये।

(7.) स्थानीय संस्थाओं को अधिक शक्तियां दी जाये और उनपर सरकारी नियंत्रण कम किया जाये।

Scanned with CamScanner

(8.) पुराने उद्योगों को पुनर्जीवित किया जाये तथा नये उद्योग स्थापित किये जायें ताकि कृषि पर दबाव कम हो और बेरोजगारी दूर हो।

(9.) नमक पर कर कम किया जाये।

(10.) ऐसे कानून बनाये जायें कि जमींदार किसानों का शोषण न कर सकें।

(11.) विदेशों में रहने वाले भारतीयों के हितों की रक्षा की जाये।

(12.) न्यायपालिका को कार्यपालिका से अलग कर दिया जाये।

(13.) प्रेस पर से नियंत्रण हटा दिये जायें और समाचारपत्रों को अधिक स्वतंत्रता दी जाये।

(14.) न्यायालय में 'जूरी प्रथा' अपनायी जाये तथा उसके निर्णयों को मान्यता दी जाये।

(15.) कृषि बैंक खोले जायें जहां से किसानों को कम ब्याज पर ऋण मिल सके।

(16.) तीसरे दर्जे के रेल यात्रियों को अधिकाधिक सुविधायें प्रदान की जाये।

(17.) भारत की निर्धनता के कारणों का पता लगाकर उन्हें दूर किया जाये।

(18.) देश में उद्योग सम्बन्धी और टेक्नीकल स्कूल तथा कॉलेज खोले जायें।

(19.) भारत में सैनिक शिक्षा देने के लिये कॉलेज खोले जायें।

उपर्युक्त, मांगों के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि अपने उदारवादी काल में कांग्रेस ब्रिटिश व्यवस्था को नैतिक और विनय पूर्वक उन मांगों के प्रति ध्यान आकृष्ट कराना चाहती थी जो भारतीयों के जनमानस को पहुँचे थे तथा जिनको व्यवहारिक रूप देकर देश के जनमानस को संतुष्ट किया जा सकता था। इन समस्त प्रयासों के परिणाम स्वरूप इंग्लैंड में भारतीय हितों को ध्यान में रखनेवाले एक प्रभावशाली वर्ग का निर्माण हो गया।

Scanned with CamScanner